beke gqlSu dh vkyeh 'k[kfl;r

अल्लामा हिन्दी मौलाना सैय्यद अहमद नक़वी मुजतहिद ताबा सराह
अनुवादक – मु0 र0 आबिद साहिब

तास्सुब के ऐनक उतार कर देखो तो संसार का कोई भी मज़हब ऐसा न होगा जिसमें ज़िन्दगी के हर हिस्से में अच्छाइयों और भलाइयोंकी शिक्षा न हो। बात यह है कि हर मज़हब का मूल उद्देश यही होता है कि मानव सुधार करे और मानवता के मान मर्यादा प्रतिष्ठा को बढ़ाये। स्वंभू दार्शनिकों के धर्मों का भी यही उद्देश होता है कि इन्सान के जीवन के हर भाग को ऊँचा रखे और जो इल्हामी (दैव बोधी) मज़हब खुदा की ओर से हैं उनका तो कुछ पूछना ही नही है। बेशक उनके समस्त विधान हुए उस सर्व स्वामी, संसारों के पालने वाले (खुदा) के बनाये हुए हैं जो इन्साफ वाला, न्यायोचित, नीतिज्ञ, सर्वज्ञ, दयालु और करुणानिधान है। उन में बुराई की आशंका भी सम्भव नही। फिर जब कुर्आन मजीद का यह दावा है कि कोई राष्ट्र (क़ौम) नबी रसूल के बिना नही छोड़ा गया है तो हरगिज़ यह मुमकिन नही है कि खुदा की ओर से दुनिया के मज़हबों में विरोध हो और एक–रंगी न हो। मज़हबों की प्राचीनता और उनके मानने वालों को आविष्कार मज़हबों के असली रंग–रूप को बदल कर रूपभ्रष्ट कर देते हैं। इस विरोध (ईश–संदेशवाहक) को मिटाने के लिए समय–समय से नबी (ईश–संदेशवाहक) और रसूल (ईश–दूत) आते हैं। (कुर्आन)

धर्मों की यह एकता बताती है कि समस्त धर्मों में ऐसी बातें मौजूद हैं जो एक दूसरे से मिलती जुलती हैं और वास्तविक शिक्षाओं को दुहराती रहती हैं। खातमुन्नबिय्यीन (अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद स0) ने सभी धर्मगन्थों के मानने वालों को सशक्त निमन्त्रण दिया था कि ''हम तुम इन बातों में मिलजुल जाएँ जो हम में और तुम में बराबर से हैं और यह कि खुदा की इबादत में किसी दूसरे को शरीक (सम्मलित) न करें'' अर्थात खुदा के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा, उपासना न करें। (कुर्आन मजीद)

दुनिया के मज़हबों ने इस निमन्त्रण को आज मान लिया है। सभी धर्म ईश्वर की तौहीद (एकेश्वरवाद) पर एक और सहमत हैं और इस बारे में ध्रुवीकरण पैदा हो चुका है। ध्रुवी डिक्टेटर व्याख्यानों में उसी एक खुदा का सहारा स्थापित कर रहे हैं। गणतन्त्र भी, बौद्ध मत भी, हिन्दू मत भी, सिख लोग भी, ब्रम्ह समाज, आर्यसमाज, सूफ़ी ईसायी, यहूदी मुसलमान सभी तौहीद का प्रचार कर रहे हैं, किसी न किसी रूप से हो। फिर क्या कारण है कि इस सम्पूर्ण कलमे और तौहीद पर एक–दूसरे से न मिल जाएँ और तुच्छ विवादों की खाड़ी को एकीकृत प्रयत्नों से पाट न दें जिससे कुर्आन और रसूल का मंशा (इरादा) पूरा हो। इसी वजह से सबसे पहले रसूल के नवासे इमाम हुसैन (अ0) ने मार्गदर्शन किया और अपनी महानतम कुर्बानी को अन्तर्राष्ट्रीय बना दिया। क्यों न दुनिया के मज़हब ठण्डे दिलों से अपना और पराया कहना छोड़कर हुसैनी कारनामे का समालोचन, अवलोकन अपने धार्मिक दृष्टिकोण से करके हुसैन (अ0) को अपना न बना ले और उनकी निर्दोषीय शहादत को अपना धार्मिक प्रतिनिधित्व न बनायें।

''पापी मनुष्य धर्म–मार्ग छोड़कर मिथ्या, पाखण्डसे माल को लेकर और बढ़ता है और उसके बाद धन आदि सम्पत्ति, खान–पान, वस्त्र, आभूषण, सवारी, मकान, मान व पद को प्राप्त करता है, अन्याय से दुश्मनों को भी जीत लेता है फिर तुरन्त तबाह हो जाता है।

इस तबाही के कारण ऋग्वेद अस्त अध्याय 3 वर्ग 18 मंत्र 2 में देखों, ''मैं दुराचार, अत्याचारियों को भी आर्शीवाद देता हूँ।'' फिर ऋग्वेद आदि भाषा भूमिका में है, ''मैं परमेश्वर इस राज में जहाँ धर्म का पालन होता है स्थापित होता हूँ। जिस देश में ज्ञान धर्म का उत्थान प्रचार होता है वह मेरा प्रिय स्थान है।''

पता चला है कि जहाँ ज्ञानधर्म का पालन न हो भगवान उस देश को छोड़ देता है जिसका नाश अवश्य हो जाता है। यह तातारियों में तुर्क की राजधानियों की इस हालत को देखो जो अपने अत्याचार, क्रूरता, खूँखारियों (रक्त पान) अज्ञानता, जिहालत, बेशर्मी, बेहयाई, अधर्म, खूँखार दरिन्दों (खतरनाक मासाहारी जानवर) की तरह हो गयी थी। उस समय मानवता के हीरो रसूल (स0) के बेटे अमर शहीद हुसैन (अ0) की इतनी बड़ी कुर्बानी की ज़रूरत हिन्दु मत के सिद्धान्तों पर कितनी ज़रूरी हो गयी थी और परमेश्वर के आशीर्वाद की कितनी पात्र थी।

गौतम ऋषि एक फ़ाख़्ता की जान बचाने के लिए अपनी गर्दन प्रस्तुत करते हैं। क्या उनके काल में यही हो रहा था कि मज़लूम (अत्याचार पीड़ित) मीसम तैम्मार के हाथ पैर काटे जायें और ज़बान काटकर इस लिए सूली दी जाए कि वह रसूल के दामाद अली (अ0) इब्ने अबुतालिब का गुणगान करते थे? क्या गौतम ऋषि के काल में यह भी हो रहा था कि जनाब मुहम्मद इब्ने अबुबक्र खुदा के रसूल के साले और ख़लीफा के बेटे को गधे की खाल में लपेट कर जला दिया जाए और इसलिए कि वह समय के ख़लीफ़ा अली मुर्तज़ा के अनुयायी और पालित–पोषित थे? जनाब रुशैद हिजरी (रसूल (स0) के एक श्रेष्ठ सहाबी) के पेट को चीर कर पत्थर भर कर इसलिए शहीद किया जाए कि वह अली (अ0) के दोस्त थे। रसूल (स0) के बेटे इमाम हसन (अ0) को राजत्याग करने पर भी इसलिए ज़हर दिया जाता है कि अली (अ0) व बतूल (जनाबे सैय्यदा स0) के लाडले थे। ऐसे राज के सम्बन्ध में बौद्धमत ऐसे पापियों के बारे में हुसैन का साथ न देगा? और उनकी संगत को अपने अपने धर्मों के अनुसार मानवधर्म न क़रार दें।

हिन्दुमत की जान अहिंसा है। क्या वह हुसैनी अहिंसा की कोई कार्यात्मक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं? इन्साफ से देखों नाना की वफात (देहान्त) पर उनकी इकलौती बेटी को बाप के बिछड़ने पर रोने से रोका जाता है। हुसैन (अ0) के भाई को ज़हर देकर मारा जाता है और नाना रसूल (स0) के पास दफन नही होने देते, लाश पर तीर बरसाते हैं फिर हुसैन (अ0) को रसूल (स0) की क़ब्र पर खामोश बैठने नही देते, हुकूमत (शासन) की माँग है कि बैअत करो या सर दो। हुसैन (अ0) मदीना छोड़कर काबे में शरण लेते हैं, कर्बाला पहुँचकर फ़ुरात नहर के किनारे खेमें गाड़ते हैं फिर खेमें उखाड़े जाते हैं, औरतों बच्चों, सवारी के जानवरों पर तीन दिन तक खाना पानी बन्द किया जाता है फिर बहत्तर प्यासों पर हज़ारों यज़ीदी टूट पड़ते हैं, छः महीने के बच्चे को जिन्दा नहीं छोड़ते, एक ही समय में दिल हिलाने वाले दुखों के पहाड़ इस मज़लूम (बेचारे

पीड़ित) पर ढाये जाते हैं और हुसैन (अ0) हिंसा के मौक़ों को छोड़ते हुए धैर्य, दृढ़ता और सहनशीलता दिखाते हैं। क्या इस अहिंसा की मिसाल (उदाहरण) इतिहास प्रस्तुत कर सकती है? अस्ताग़फ़िरुल्लाह, तौबा–तौबा।

क्या हुसैन इस अहिंसा की बदौलत इस मातम (सोग) के पात्र नहीं जो मनुजी महाराज की मनुस्मृति अध्याय पाँच में है, ''लड़ाई में तलवार आदि की चोट खाकर जो मर जाए तो उसका क्रियाक्रम उस समय समाप्त हो जाता है और साथ ही साथ पुण्य भी समाप्त हो जाता है परन्तु परदेस में मर जाए और दस वृत पूरे न हों तो दस दिन में जितनी कमी हो उतने दिन उसका सोग करें।''

फिर अध्याय सात में है प्रशंसनीय है योद्धा का धर्म है, युद्ध की दिशा में शत्रुओं को मारना क्षत्रिय इस धर्म को नहीं छोड़ते''

इमाम हुसैन (अ0) ने मानवता की रक्षा में जंग, धर्म रक्षा के लिए जंग, मानवता को भस्म करने वाले दुराचार के विरुद्ध रक्षात्मक युद्ध, बहत्तर जानों की हज़ारोंसे तीन दिन की भूख–प्यास में जंग करना और शहादत के बाद तीन दिन तक अरब के रेगिस्तानी तपती धरती पर लाशों का पड़ा रहना और क्रियाक्रम न होना क्या गौरव के योग्य नही है।

हिन्दू धर्म स्वयं न्याय करे, यदि उस समय मनुजी महाराज कर्बला में होते तो इन दुखी–पीड़ितों का क्या अन्तेष्टि (कफन–दफन) न करते और दस दिन स्वयं सोग करते या न करते। इस लिए कि मानवता की माँग तो यही थी। फिर उनके उपासक (अनुयायी) उनको क्या यह अधिकार नहीं पहुँचता कि इस अन्तर्राष्ट्रीय मानव का पहली मुहर्रम से दस तक मातम (शोक) करें और हुसैन (अ0) की याद मनायें जैसा कि सज्जन–विचार के लोग, मानवता के ध्वजवाहक हिन्दू बहुतात से इस समय भी मज़लूम हुसैन (अ0) की अज़ादारी करते हैं।

हुसैन (अ0) की नबव्वती शान

तौरेत, ज़बूर, इन्जील (सुसमाचार), कुर्आन को साफ़ नज़र से देखो। जिस दुष्कर्म, अत्याचार, अन्याय और बेदीनी (अधर्मिता) के समय नबियों ने बेजिगरी से मुसीबतों (दुखों), तकलीफ़ों (कष्ठों) को सहन किया है, हुसैन (अ0) ने भी अपने काल में अरबों की अत्याधिक बिगड़ी हुई दुर्दशा को सुधारने में भूतपूर्व नबियों से अधिक साहस, मर्दानगी (पौरुष) के साथ अत्याचारी सम्राज्य का मुक़ाबला करके अपनी कुर्बानी पेश (प्रस्तुत) की है और मानवता के सुधार में नबियों के बराबर चलते रहे और वही रंग–ढंग रहा जो नबियों का था और क्यों न होता इसलिए कि हुसैन (अ0) नबियों और रसूलों के वारिस थे। कर्बला के मैदान में अपने कर्म से जिस प्रकार कुर्आनी शिक्षा दे रहे थे उसी प्रकार तौरेत, इन्जील, ज़बूर और नबियों के ग्रन्थों की शिक्षा दे रहे हों।

जब दुनिया वालों के आचरण बिगड़ते, खुदा के रसूल सरों को हथेलियों पर रखे सामने आ जाते थे। हुसैन (अ0) ने भी वही किया और ठीक मौक़ों पर किया। हज़रत मूसा (अ0) की नबुवत का सबसे बड़ा कारनामा यह था कि फिरऔन के अत्याचारों के बचाकर बनी इस्राईल को निकाल लाये। हुसैन (अ0) का क्या यह कारनामा कम है कि अपनी शहादत से खुदा के करोड़ों बन्दों (दासों) को यज़ीदियत से बचा लिया? जनाब ईसा (ईशू मसीह अ0) का ईसाईयों

की दृष्टि में सबसे बड़ा काम सूली पर चढ़ना था। इन्साफ करों हुसैन (अ0) ने अकेले नही बहत्तर जानों से जिनमें छः महीने का बच्चा भी है, खुदा की राह में कुर्बानी दे दी। इसलिए कोई यहूदी, ईसाई नही कह सकता कि हुसैन (अ0) ने उनके सिद्धान्तों और विधानों का पूरा–पूरा प्रतिनिधित्व नही किया। इसलिए इस महान शहादत पर नबियों ने स्वयं शोक का हुक्म दिया (देखो हमारी उूर्द किताब ''नबियों का मातम'') इस मौक़े पर सिर्फ मियाह नबी (अध्याय–46 पेज–90) की भविष्यवाणी सुन लो, ''क्योंकि सेनाओं के नायक स्वामी खुदा के लिए उत्तर की धरती में फ़ुरात नदी के किनारे ज़बीहा (कुर्बानी) निश्चित हुई है।

हुसैन (अ0) के अतिरिक्त फ़ुरात के किनारे खुदा की राह में किसकी बलि हुई। इसी जुर्म पर जो दुनिया वालों की नज़र में जुर्म था यानी हुकूमतों (राज्यों) ने जो अपने लिए प्रभुत्व अधिकार समझ लिए थे उसका प्रतिरोध करते थे और दानवता मिटाकर मानवता का मार्गदर्शन करते थे।

ukSgk

अल्लामा फ़ातिर जायसी

घर लिए फिरता है हर दिल बेवतन के वास्ते
आँख साग़र हो गई तशना दहन के वास्ते

शाम जाते खूब रोए लाशे सरवर पर हरम
एक चादर भी न थी बाक़ी कफन के वास्ते

उन सा बाग़ी बढ़ के होगा कौन ज़ेरे आसमाँ
लाए जो तीशा पयम्बर के चमन के वास्ते

इसको कहते हैं मुसीबत इसको कहते हैं मलाल
आसमाँ रोया लहू तशना दहन के वास्ते

कर चुका तजवीज़ मुद्दत से सिपहरे नीलफाम
तीर का काँटा सग़ीरे गुलबदन के वास्ते

सर की चादर भी न छिन जाती तो क्या करते हरम
मुँह छिपाते या उठा रखते कफन के वास्ते

ख़ित्त–ए–यसरिब से आकर कर्बला में हो गई
दुख़्तरे मुशकिल कुशा बन्दे रसन के वास्ते

ले गए ऑदा तो ले जाएँ लिबासे शाहे दीं
चादरे ततहीर बाक़ी है कफन के वास्ते

गर्म थी खाक इसलिए उठकर निगाहे यास ने
छान डाला चर्ख़ असग़र के कफन के वास्ते

ये क़यामत तक न निकलेगा कभी ए आसमाँ
फातिमा का चाँद आया था गहन के वास्ते

असरे आशूरा को लाईं आँधियाँ उठकर सियाह
भाई की ख़ातिर कफन चादर बहन के वास्ते

लाई थी बच्चे को माँ एक दिन पए नज़रे हुसैन
जब कभी रोए थे बचपन में हिरन के वास्ते